

Dr. Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G. Deptt. of Psychology
Maharaja College Ara
Date: 17/10/2025
Class: P.G Semester - 3rd
(C.C-12)
Educational Psychology.
Topic - introduction and brief historical background of educational psychology

परिचय (Introduction)

शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक प्रयुक्त (applied) शाखा है जिसके द्वारा मनोवैज्ञानिक तथ्यों एवं ज्ञान (knowledge) को शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग में लाते हैं। दूसरे शब्दों में, शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षार्थी के उन अनुभवों एवं व्यवहारों का अध्ययन है, जो किसी भी शैक्षणिक वातावरण में किये जाते हैं। अर्थात् इसका प्रमुख कार्य सीखने वाले के उन व्यवहारों का अध्ययन करना है जिसका प्रभाव उनके शिक्षण पर पड़ता है। यह शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों की मदद करता है। स्वतंत्र (Pure or Natural) विज्ञान की तरह यह विषय से संबंधित सभी सूचनाएँ एकत्रित करता है और नियमों एवं सिद्धांतों के आधार पर उनकी व्याख्या करता है।

शिक्षा के दो पहलू हैं सीखना और सिखाना। सभी बच्चे एक समान नहीं होते। उनमें वैयक्तिक भिन्नता पायी जाती है। उनकी वैयक्तिक भिन्नता का पता लगाकर उसी के अनुरूप उनकी शिक्षा की दिशा तय करना, शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य है। बच्चों की योग्यताएँ भी अलग-अलग होती हैं। शिक्षा मनोविज्ञान की सहायता से उनकी योग्यता को मापकर उनके लिए अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था की जा सकती है। सीखने वाले के साथ-साथ यह शिक्षकों को भी अच्छी शिक्षा देने योग्य बनाता है। शिक्षा मनोविज्ञान अपने सिद्धांतों नियमों तकनीकी ज्ञान (technical) शिक्षण सामग्री एवं उपयोगी अनुभव के माध्यम से शिक्षक की कार्यप्रणाली का विश्लेषण करता है। उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में अपने कौशल के द्वारा बच्चों के सही मार्गदर्शन के योग्य बनाता है।

शिक्षा मनोविज्ञान उचित पाठ्यक्रम बनाने में भी अपना सहयोग देता है। बच्चों की बौद्धिक क्षमता और उम्र दोनों का ख्याल रखते हुए पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है जिससे वर्ग की पढ़ाई बच्चों के लिए सुगम हो सके। बच्चों की मनोवृत्तियों का पता लगाना, उनकी अभिरुचि एवं प्रतिभा को खोज निकालना उनकी कार्यक्षमता को मापना उनके चेतन और अचेतन व्यवहार की समीक्षा करना, उनके प्रेरणात्मक व्यवहार, समूह व्यवहार, मानसिक संघर्ष, इच्छा और मानसिक स्वास्थ्य की विवेचना करना शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य कार्य है। इन तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर वह सीखने और सिखाने वाले दोनों के व्यवहार का नियंत्रण करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन एवं परिमार्जन के लिए उचित वातावरण तैयार करने में भी सहायक है। वह शिक्षकों को रचनात्मक अनुशासन कायम करने में भी सहायता प्रदान करता है। शिक्षक बच्चे की क्षमता प्रतिभा के बारे में बच्चों के माता-पिता से भी अधिक जानते हैं। अतः वे उनके व्यवहार का सही मूल्यांकन कर उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक हो सकते हैं। इतना ही नहीं, शिक्षा मनोविज्ञान की सहायता से अपने कौशल (skill) एवं निपुणता को विकसित कर कक्षा में उत्पन्न समस्याओं एवं विषमताओं को दूर कर सकते हैं। शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षकों को खुद अपने विचारों, पसन्द-नापसन्द, प्रेरणा, चिन्ता, संघर्ष, अभियोजन आदि समस्याओं से अवगत करा अपने निर्णयों का मूल्यांकन करने के योग्य बनाता है।

संक्षेप में, शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा के सही अर्थ से हमें परिचित कराता है और शिक्षण सम्बन्धी सभी समस्याओं के निदान में सहायता पहुँचाता है। यह शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों के बीच के परस्पर सम्बन्धों की व्याख्या करता है, जिससे शिक्षा सुचारु रूप से चल सके। स्कूल में बड़े प्रभावी ढंग से इसकी व्याख्या की है। उनके अनुसार "Educational Psychology is that science, which helps to provide a better background for understanding the total job of teaching in all its intricacies."

शिक्षा मनोविज्ञान का संक्षिप्त इतिहास (Brief Historical Background)

शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक शाखा है। अन्य विज्ञानों की तुलना में मनोविज्ञान नया विज्ञान है- पर इसका अस्तित्व हमारे दर्शनशास्त्र में विद्यमान था। दर्शनशास्त्र में मनोविज्ञान को मन या आत्मा का विज्ञान माना गया है। समय के साथ मनोवैज्ञानिकों ने मन और आत्मा के अध्ययन से हटकर मनुष्य के अनुभवों एवं व्यवहारों पर ध्यान केन्द्रित किया और उसी के आधार पर मनोविज्ञान की पहली परिभाषा 'अनुभव एवं व्यवहार' के विज्ञान के रूप में दी गयी।

मनुष्य के द्वारा किसी भी अवस्था में किये गये कार्य को हम व्यवहार कहते हैं। व्यवहार सम्बन्धी किसी भी क्रिया के क्रमबद्ध नियंत्रित एवं पुनर्निरीक्षण विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान को हम विज्ञान कहते हैं। इसलिए अधिक-से-अधिक अनुसंधान (research) व्यवहारों के विश्लेषण की दिशा में किये गये हैं। व्यवहार सम्बन्धी समस्याएँ जब बढ़ने लगीं तो इसके गहन अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुई। फलस्वरूप भौतिकी (Physics) शरीर क्रिया विज्ञान (Physiology) एवं आयुर्विज्ञान (Medical Science) से सम्बन्धित लोगों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ और मनोविज्ञान की व्याख्या वैज्ञानिक तरीके से की जाने लगी। Wundt (1879) नामक शरीर क्रिया वैज्ञानिक (physiologist) ने लिपजिक में विश्व की पहली प्रयोगशाला स्थापित की। फलस्वरूप मानव व्यवहार सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन क्रमबद्ध एवं नियंत्रित वातावरण में आरंभ हुआ। जैसे-जैसे प्रयोग एवं परीक्षण होते गये मनोविज्ञान एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में विश्व में मान्य हो गया।

अन्य विज्ञान की तरह मनोविज्ञान के भी दो पहलू हैं स्वतंत्र (Natural) और प्रयुक्त (applied)। स्वतंत्र मनोविज्ञान जहाँ मनुष्य के व्यवहार सम्बन्धी सभी समस्याओं के अध्ययन के लिए नियमों (Principles) सिद्धांतों (Theories) और तकनीक (Technique) का निर्माण करते हैं, वहीं प्रयुक्त मनोविज्ञान से जुड़े मनोवैज्ञानिक अपनी सूझ-बूझ, कौशल एवं निपुणता के द्वारा उन नियमों, सिद्धांतों को मानव व्यवहार से जुड़ी समस्याओं के अध्ययन के लिए प्रयोग में लाते हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक प्रयुक्त शाखा है। मनोविज्ञान की ऐसी अनेक प्रयुक्त शाखाएँ हैं जो मानव व्यवहार से जुड़ी प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग देती हैं। चूँकि शिक्षा के क्षेत्र में सबसे ज्यादा अध्ययन हुए हैं, इसलिए शिक्षा मनोविज्ञान की उपयोगिता सबसे अधिक है। दिये गये Pictorial form से शिक्षा मनोविज्ञान की स्थिति स्पष्ट हो जाती है।